7-9-02

वायुमण्डल को रूहानी बनाना निमित्त आत्माओं की जिम्मेवारी

(समर्पित भाईयों की भट्ठी में)

आज विशेष अपने आल इन्डिया के समर्पित भाईयों की और खास हमारी मीठी दादी जी की याद लेते हुए अमृतवेले के समय वतन में पहुंची तो आज क्या देखा कि बापदादा आज बहुत बिज़ी हैं, मुझे देखने की भी फुर्सत नहीं थी लेकिन मैं दूर से ही न्यारा प्यारा अनुभव कर रही थी कि बापदादा से बहुत पॉवरफुल वायब्रेशन चारों ओर फैल रहे हैं जो चारों ओर के ब्राह्मण आत्माओं को दे रहे हैं। जैसे सूर्य द्वारा कभी कभी 7 रंगों की लाइट दिखाई देती है, ऐसे सर्व शक्तियों के सूक्ष्म वायब्रेशन की शक्ति सारे देश विदेश के ब्राह्मणों को मिल रही है। ऐसे वायुमण्डल के बीच डायरेक्ट मैं बहुत आनंदमय मगन स्थिति का अनुभव करते आगे पहुंच गई। बोलो, आप भी मनोबल द्वारा यह अलौकिक अनुभव कर रहे हो ना। कुछ समय के बाद बाबा की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी तो मुस्कराते हुए समाचार पूछा और बोले बच्ची, आज देखा अमृतवेले मात पिता कैसे सर्व बच्चों की रूहानी पालना करते हैं। उस पालना का अनुभव भी नम्बरवार कैचिंग पावर वाले बच्चे कैच कर उड़ते रहते हैं। बापदादा तो सर्व बच्चों की पालना करते हैं लेकिन भाग्यवान बच्चे अपना भाग्य ले लेते हैं। (बोलो आप सब तो अनुभव करने वाले हैं ना?)

बाद में बाबा को समाचार सुनाया कि आजकल समर्पित भाईयों की भट्ठी चल रही है। हमारी दादी को तो बहुत प्यार आ रहा है, उमंग से रिफ्रेश कर रही हैं। दूसरी दादियां, दीदियां भी बहुत पालना दे रही हैं। बाबा बोले दादी को तो हर ब्राह्मण आत्मा को देख बहुत उमंग आता है कि बस सभी अभी अभी सम्पन्न बन जायें। यही बड़ों की शुभ भावना का फल उन्हों को मदद

मिल जाती है। ऐसे कहते बाबा ने दादी जी को बहुत-बहुत प्यार की दृष्टि में समा लिया। बाद में बाबा बोले, इस ग्रुप के भाग्य को देख बाबा खुश हो रहे हैं कि आजकल की दुनिया के संग और वायुमण्डल से किनारा कर परमात्म सेवा में आ गये हैं। अगर दिल से परमात्म सेवा स्थान के महत्त्व को जानते हैं तो सेवा का फल और बल एकस्ट्रा मिलता है, जो बच्चों के लिए एक ईश्वरीय गिफ्ट तीव्र पुरुषार्थ की सहज लिफ्ट बन जाती है। परन्तु हर ग्रुप में नम्बरवार तो होते ही हैं। बापदादा तो हर बच्चे की यह विशेषता देख रहे थे कि हर मेरा बच्चा 1- संकल्प 2- बोल 3- वातावरण और 4- पुराने संस्कार इन सब बातों में कहाँ तक सफल जीवन बना रहे हैं क्योंकि यह एक एक बच्चा अपने स्थान में समर्पित जीवन के एक सैम्पुल, एग्जैम्पुल है। इसलिए इन आत्माओं की भी बड़ी जिम्मेवारी है क्योंकि सैम्पुल को देखकर ही अन्य सौदा करते हैं, हिम्मत रखते हैं। जैसे निमित्त टीचर्स की जिम्मेवारी है ऐसे ही सरेन्डर निमित्त आत्माओं की भी जिम्मेवारी है - वायुमण्डल को रूहानी बनाने की। हम सरेन्डर हैं यह कहलाना, कोई कामन बात नहीं है। एकस्ट्रा प्राप्ति भी है तो जिम्मेवारी भी है।

बापदादा जानते हैं इस ग्रुप में भी कोई बच्चे तो निश्चय, ज्ञान योग के आधार पर, रूहानी प्राप्ति के आधार पर चल रहे हैं, कोई कोई ज्यादा दुनिया की खिट-खिट से बचने और अच्छा संग साथ मिलने के आधार से चल रहे हैं लेकिन अपने परिवर्तन पर कम अटेन्शन है। कोई सिर्फ सेवा के बल से, सेवा से प्यार सहज और सेफ समझ चल रहे हैं। भिन्न-भिन्न लक्ष्य वाले बच्चे हैं। लेकिन बापदादा यही चाहते हैं कि मेरा हर बच्चा जो ड्रामा में गोल्डन चांस श्रेष्ठ भाग्य बनाने का मिला है तो पूरा-पूरा भाग्य ले भाग्यवान बने। बापदादा तो हर बच्चे के मस्तक में ऊंचे लक्ष्य, लक्षण का चमकता हुआ सितारा देख हर्षित होते हैं कि वाह मेरा हर बच्चा वाह! बच्चों को कहना जितना चाहो भाग्य की खुली खान है, खूब भाग्य बनाओ, उड़ो और उड़ाओ यही श्रेष्ठ भाग्य का वरदान बापदादा की तरफ से हर बच्चे के लिए सौगात

है। सम्भालने की हिम्मत आपकी, मदद पद्मगुणा बाप की। ऐसे कहते बापदादा ने दादियां, दीदियां और साथ में जो भी सेवा के निमित्त टीचर्स बनी हैं उन्हों को भी बहुत-बहुत यादप्यार दिया और मैं साकार वतन में आ गई।